हिन्दी साहित्य में वर्णित वृद्धजन:

चित्रण, चुनौतियाँ और समाधान

संपादक

डॉ. बीना कुमारी नायर वी.जी

डॉ. महालक्ष्मी के

हिन्दी साहित्य में वर्णित वृद्धजन:
चित्रण, चुनौतियाँ और समाधान

संपादक:
डॉ. बीना कुमारी नायर वी जी
डॉ. महालक्ष्मी के

Elderly in Hindi Literature: Depiction, Challenges, and Solutions

Editors: **Dr Beena Kumari Nair V G & Dr Mahalakshmi K**

First Edition: August 2025
Pages: 226
Printed at Rathna Offset, Chennai
Cover Design & Layout: Vijayan, Creative Studio
ISBN: 978-81-977848-9-7

Price: Rs. **400/-**

Published by
CREATIVE STUDIO
571/2A, Anna Salai, Teynampet,
Chennai - 600 018
vijayanstudio@gmail.com
Cell: 9840275550

26. 'एक ब्रेक के बाद' उपन्यास में चित्रित महानगरों में वृद्ध का जीवन
- **आर.डी. निर्मला** 136

27. हिन्दी कथा साहित्य में वृद्धों के चित्रण
- **डॉ. एस मुतु कुमार** 141

28. पीढ़ियों के बीच विचारों का टकराव: कारण और समाधान
- **डॉ प्रवीण कुमार मिश्र** 145

29. परंपरागत बनाम आधुनिक संस्कृति में बुजुर्गों का सम्मान:
नीरजा माधव के उपन्यासों के सन्दर्भ में
- **डॉ. एल तिल्लै सेलवी - प्रो. एस. प्रसन्ना देवी** 150

30. हिंदी कहानियों में वृद्ध जीवन: एक अध्ययन
- **अनीषा एन** 155

31. वृद्धजन: समाज में उनकी स्थिति और साहित्य में उनका चित्रण
- **डॉ. विजयलक्ष्मी** 158

32. वृद्धवस्था और हिंदी कथा-साहित्यः एक सामाजिक परिप्रेक्ष्य
- **डॉ. सरोज सिंह** 162

33. 'उषा प्रियंवदा' की प्रसिद्ध कहानी "वापसी" में वृद्धावस्था
और सेवानिवृत्त जीवन के बाद के जीवन
- **डॉ. महालक्ष्मी के** 168

34. प्रेमचन्द की कहानियों में चित्रित वृद्धावस्था
- **डॉ. बीना कुमारी नायर वी.जी** 172

35. इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविताओं में वृद्धावस्था
- बोझ या अनुभवों का भोज?
- **डॉ. रा. रमीला** 176

36. भीष्म साहनी की कहानी "चीफ की दावत" में चित्रित
वृद्धावस्था की मनोभाव - **डॉ. उमा. एल** 182

37. आज के समाज में बुजुर्गों की भूमिका में हो रहा बदलाव
- **डॉ. सुमित्रादेवी** 185

'एक ब्रेक के बाद' उपन्यास में चित्रित महानगरों में वृद्ध का जीवन

शोधार्थी: आर.डी. निर्मला
शोध निर्देशिका: डॉ.अनुराधा पाकलपाटि, सहायक प्राध्यापक
वेल्स इंस्टिट्यूट ऑफ़ साइंस,
टेक्नोलॉजी एंड एडवांस स्टेडीज (विस्टास)

भूमिका:

'एक ब्रेक के बाद' उपन्यास में चित्रित महानगरों में वृद्ध का जीवन अलका सरावगी के द्वारा लिखित उपन्यास में कारपोरेट जगत के बारे में है। इससे संबंधित महानगरीय जीवन के संस्कृति, भाग दौड़, रिश्ते, आदि विषयों को दर्शाया है। इस उपन्यास में तीन मुख्य वृद्ध पुरुषों के पात्रों के द्वारा सामाजिक एवं मानसिक स्थिति और महानगरों के बदलती संस्कृति को प्रस्तुत किया है। पहला वृद्ध पात्र के.वी.शंकर अय्यर एक कॉरपोरेट मैनेजर के पद पर लगभग सेवा से निवृत होने वाले उम्र के व्यक्ति थे। दूसरा वृद्ध पात्र गुरुचरण राय बंगाली वृद्ध लेखक और चिंतक थे। तीसरा विरुद्ध पात्र भट्ट बनारसी वृद्ध व्यापारी थे।उसकी पत्नी के साथ उसके रिश्ते में भी दूरी है, पर वह इसे जीवन का एक हिस्सा मानकर स्वीकार करता है।

वृद्धावस्था:

वृद्धावस्था के समय मनुष्य के जीवन में शारीरिक और मानसिक बदलाव आता है। स्वास्थ्य संबंधी परेशानियाँ आती है। मानव जीवन के इस चरण को बुढ़ापा कहते हैं। वृद्धावस्था में मनुष्य अपना भौतिक जिम्मेदारियों से मुक्त होते हैं। लेकिन उनकी मानसिक, भावनात्मक एवं सामाजिक स्तरों पर सबसे अधिक मदद, सहारा और सम्मान की आवश्यकता होती है। उपन्यासकार अलका सरावगी ने इस उपन्यास में महानगरीय जीवन के संदर्भ में एक नई दृष्टि है। लेखिका ने इसमें वृद्धावस्था को सिर्फ आयु या उम्र के रूप में नहीं बल्कि पारिवारिक, सांस्कृतिक और संवेदनात्मक स्थिरता और विघटन के अनुभव के रूप में प्रस्तुत किया है।

महानगरों में वृद्धों का अकेलापन:

महानगरों में वृद्धों का अकेलापन बहुत बड़ी समस्या है। वे लोग परिवार में होते हुए भी परिवार से दूर हो जाते हैं। बिना सामाजिक संपर्क, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ, अकेलापन आदि बढ़ती जा रही है। वृद्ध लोग इस समाज से अलग हो जाते हैं। वे अपने दोस्तों से परिवार से दूर हो जाते हैं। वृद्धावस्था में आमतौर पर स्वास्थ्य संबंधित कठिनाइयाँ शारीरिक और मानसिक रूप से होती है। खासकर जब वे अपने दोस्तों और परिवार से अलग हो जाते हैं, उनके अलगाव और अकेलेपन में उनका स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ और अधिक बढ़ जाती है। वृद्धावस्था में उनके पास पर्याप्त धन न होने के कारण असुरक्षा का भाव पैदा होता है। जिसके कारण वे समाज में होने वाले अन्य कार्यक्रमों या गतिविधियों में नहीं जा पाते हैं। हमेशा उनको दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। चिंता और अकेलेपन के कारण वृद्ध लोगों को शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ जाती है। उनको उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, अल्जाइमर आदि समस्याएँ आजकल बढ़ती जा रही है। परिवार की संरचना, समाज के पारंपरिक मूल्यों, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन, एक दूसरे से संपर्क टूटना आदि वैश्वीकरण और शहरीकरण के कारण हो गया है। "आज मुझे माँ की बहुत याद आ रही है"- के.वी. की बात सुन गुरुचरण फिर चौंक उठा। क्या बात है? हो सकता है कि के. वी. की माँ की आज बरसी हो।" के.वी.शंकर अय्यर नशे में अपने दोस्तों के साथ बैठकर अपनी माँ की याद करते हुए अपने बचपन के बारे में बताते हैं और इससे पता चलता है कि अभी दुख में माँ की याद में अपने अकेलेपन को महसूस करते हुए इन सारी बातों को व्यक्त करते हैं।

"भट्ट रोने लगा। पहले धीरे-धीरे। फिर जोर से। वह बेसुध होकर रो रहा था। बिना कुछ सोचे, बिना किसी की परवाह किए। बड़े होने के बाद से वह कभी इस तरह नहीं रोया था। माँ के मरने पर भी नहीं। न आज तक उसने सोचा था कि वह इस तरह विलाप कर सकता है" वृद्धावस्था में अपने दोस्त को खो जाने के दर्द में भट्ट अपना दुख प्रकट करते हैं।

महानगरों में वृद्धों के प्रति बदलती परिभाषा:

महानगरों के सामाज में रहने वाले एकल परिवार और उनकी व्यवस्था एवं प्रवृत्तियाँ वृद्ध लोगों को रिश्तों से दूर कर दिया है। महानगरों में वृद्ध और नई पीढ़ियों के बीच दूरी और असंवेदनशीलता अधिक है। संयुक्त परिवार में घर के सदस्यों ने बुजुर्गों की देखभाल करते हैं। लेकिन आजकल संयुक्त परिवार एकल परिवार में बदल गई है। उद्योग, शहरीकरण और आधुनिक जीवन शैली के कारण संयुक्त परिवार प्रणाली ही मिटती जा रही है। जिसके कारण वृद्ध लोगों को अधिक कठिनाइयों का सामना करना

पड़ता है। वे अपने पुराने यादों में जीते हैं। उनका वर्तमान नीरस हो जाता है। एक तरह का अजनबीपन हो जाता है। वे अपने आपको एक ही कमरे में सीमित कर देते हैं। घर के परिवार वालों को समय के अभाव के कारण घर के बुजुर्गों से बात नहीं कर पा रहे हैं। महानगरों में वृद्ध और नई पीढ़ियों के बीच की दूरी और असंवेदनशीलता अधिक होती जा रही है। इस उपन्यास में महानगरीय जीवन की तेज चलने वाली समय और पीढ़ियों के बीच का अंतराल अलग विचारधारा स्पष्ट रूप से उभरती है।

अलग विचारधारा और बदलती परिस्थितियाँ:

के. वी. के जीवन "पहले कोई आदमी बरसों तक एक ही कंपनी में काम करता, तो वह वफादार और भरोसेमंद समझा जाता था। अब वह 'डल', 'बोरिंग' और 'बुद्धू' समझा जाता है।" इसमें उनकी व्यथा को प्रस्तुत किया गया है। इंसान के अनुभव और स्थायित्व को कोई सामान नहीं देता है। अब वे यह महसूस करते हैं कि मध्य उम्र के या बुजुर्गकता में व्यक्ति सिर्फ एक बोझ या बोरिंग समझा जाता है।

गुरुचरण की विचारधारा यह कि "मन अलबत्ता कहीं लगेगा नहीं किसी का। चार घंटे में नहीं, तो चार दिन में ऊब जाएगा। पर घूमता रहेगा आदमी। घूमता रहेगा। यहाँ से वहाँ। इस चीज से उस चीज। शायद इस बार मन लग जाए-हमेशा के लिए। ऐसा कुछ भ्रम पालते हुए" इसमें गुरुचरण की मनोदशा दिखता है। एक वृद्ध चिंतक, जो स्थिरता की जगह मुक्त जीवन में विश्वास रखता है। पर यह सिर्फ एक स्वप्न है।

घर की परिस्थितियों के कारण भट्ट शारीरिक रूप से जीवित है, लेकिन अंदर से वे मर गए थे। इन तीन पत्रों की वृद्ध जीवन में पहला वृद्ध पात्र के.वी.शंकर अय्यर को पछतावा, आत्म चिंतन है। गुरुचरण को मानसिक थकावट और भट्ट को स्मृतियों में जीने की दशा होती है।

"पत्नी के चेहरे की बदलती हुई रेखाओं को देखते-देखते भट्ट को अचानक नई पत्नी समझ में आ गई। चालीस की उम्र तक आते-आते आदमी दुनिया को समझ कर होशियार हो लेता है। वह दुनिया की चाल-ढाल जानकर अपने निष्कर्ष निकाल लेता है कि दुनिया वैसी नहीं है जैसी वह समझता आया था। दुनिया के बदलने की उम्मीद उसके अंदर कम होती जाती है। भट्ट की पत्नी अब अपने लिए अपनी दुनिया बनाने की जगह चाहती थी-ऐसी जगह जिसमें भट्ट का दखल क्या, उसके बेटे की भी आवाजाही न हो।" उन्होंने ये समझ लिया कि दुनिया या लोग पुराने जैसे नहीं है। उम्र के साथ साथ मनुष्य शारीरिक रूप से मात्र नहीं मानसिक रूप से भी बदल जाते हैं। वृद्धावस्था में रिश्तों को समझकर साथ चलना है। यह घर में रहने वाले लोगों के बीच के रिश्तों में असंतुलन और स्त्री के भीतर दबे प्रश्नों को दर्शाया है। भट्ट की पत्नी चाहती तो बहुत कुछ पूछना चाहती है, लेकिन वह अपनी बात कह ही नहीं

पाती है। जो इंसान अपने जीवन में दूसरों को मार्गदर्शन देता था, निर्णय लेता था, अपने अनुभव और परिश्रमों से दूसरों को प्रेरित करता था अब वही अपने वृद्धावस्था के समय अपने रास्ते से भटकता है अकेला हो जाता है सेवानिवृत होने के बाद आत्म संघर्ष में चला जाता है संवेदनहीन और प्रासंगिक हो जाता है।

आज की महानगरों में नई ज़िंदगी की तलाश में बुजुर्ग:

आधुनिक जीवन की तीव्र गति बदलते समाज और परिवार में रहने वालों की मन की स्थिति वृद्धों को अकेलेपन में डाल देता है। घर में सब लोगों को होते हुए भी वृद्धो के मन में ऐसा भाव होता है कि उनके साथ कोई नहीं है। इस आधुनिक काल में युवा अपने काम और तेज जीवन के पीछे भागते रहते हैं। महानगरों में वृद्धि लोग घर के बालकनी और खिड़कियों के द्वारा बाहर का दृश्य देखकर अपना जीवन जी रहे हैं। आजकल के बच्चों के पास अपने बुजुर्ग माता-पिता के साथ बैठकर थोड़ी देर समय बिताने के लिए उनके पास वक्त नहीं है। वृद्ध माता-पिता अपने बच्चों के घर में रहने के बावजूद भी उनके निर्णय का कोई महत्व नहीं है। आज के एकल परिवार में कभी कबार आते दादा-दादी और नाना-नानी बच्चों के लिए मेहमान हो जाते हैं। वृद्ध लोगों की बातें या सुझाव बच्चों के लिए अच्छा नहीं लगता है। वृद्ध लोग जिसे वे बात करना चाहते हैं वह नहीं सुनते हैं।

"पचास साल की उम्र के बाद मैं अपनी पहली जिन्दगी और बर्दाश्त नहीं करूँगा, ऐसा मेरा संकल्प था। अब वह समय आ गया है। वह खोखली दुनिया, जो दूसरों को नष्ट कर उनका खून चूसकर पनपती है और हवा-पानी में जहर घोलती है मैंने छोड़ दी है। लेकिन मैंने अपना कुछ भी वहाँ नहीं छोड़ा है। उसके लिए मैं मर गया हूँ और मेरे लिए वह मर गई है। मैंने अपने प्राविडेंट फंड, ग्रैच्युटी वगैरह के सारे रुपये 'लोन' लेकर उठा लिए हैं। अब यह मेरी दूसरी जीवन-यात्रा शुरु होगी फूलों की घाटी से।" गुरुचरण की डायरी में भट्ट ने इसे पढ़कर सोचने लगा कि गुरुचरण के पहली जीवन के बारे में उसे नहीं पता था। भट्ट अपने दोस्त के मृत्यु के बाद उसकी डायरी पढ़ते हुए वापस निकल पड़ा था।

निष्कर्ष:

"एक ब्रेक के बाद" उपन्यास में अलका सरावगी ने दिल्ली, मुंबई और चेन्नई महानगरों का उल्लेख करते हुए प्रस्तुत उपन्यास में तीन वृद्ध पात्रों का जीवन को चित्रित किया है। जिसमें महानगरीय जीवन में बुजुर्ग पुरुषों कीं अकेलापन, अदृश्यता और निरर्थकता को बहुत ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। उन वृद्ध पुरुषों को अब समाज में केवल 'पूर्व अधिकारी', 'पूर्व चिंतक', या 'पूर्व व्यक्ति' पुकारे जाएँगे। अब कोई भी उनका परिचय नहीं पूछता है। आजकल के बच्चों को बचपन से ही बड़ों के प्रति

सम्मान और सहानुभूति सिखाना चाहिए। बड़ों को और बच्चों को अपने दिनचर्या में घर के बुजुर्गों के लिए थोड़ा समय उनके साथ बैठकर उनसे बातें करना और उनकी बातें सुना चाहिए। वृद्धावस्था जीवन की अंतिम अवस्था है जिसमें मनुष्य अनुभवों, संघर्षों के साथ शांति से जीना चाहता है। समाज के हर एक सदस्य को अपने घर के बुजुर्गों को जीने के लिए स्थान देना है, न कि उनको वृद्धाश्रम में छोड़ना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. संपादक: डॉ. शिवचंद्र सिंह, साहित्येतिहास में वृद्ध विमर्श, दिशा इंटरनैशनल पब्लिशिंग हाउस ग्रेटर नोएडा, संस्करण 2017
2. संपादक: डॉ. दिलीप मेहरा, हिन्दी कथा साहित्य में वद्ध विमर्श, उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर, संस्करण 2021
3. संपादक: डॉ. शगुफ़्ता नियाज़, अनुसंधान (त्रैमासिक शोध पत्रिक), अप्रैल-सितम्बर 2021 (संयुक्तांक), अलिगढ़
4. अलका सरावगी - एक ब्रेक के बाद, राजकमल प्रकाशन 2010 (पृ.73)
5. अलका सरावगी - एक ब्रेक के बाद, राजकमल प्रकाशन 2010 (पृ.33)
6. अलका सरावगी - एक ब्रेक के बाद, राजकमल प्रकाशन 2010 (पृ.85)
7. अलका सरावगी - एक ब्रेक के बाद, राजकमल प्रकाशन 2010 (पृ.133)
8. अलका सरावगी - एक ब्रेक के बाद, राजकमल प्रकाशन 2010 (पृ.203-204)
9. अलका सरावगी - एक ब्रेक के बाद, राजकमल प्रकाशन 2010 (पृ.212)